फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें। पत्र लिखें, मिलें।

नई सीरीज नम्बर 245 | 1/– | नवम्बर 2008

इन सौ वर्षों में

व्यवस्था, संकट, मन्दी, महामन्दी भारी-भरकम शब्द हैं। इनकी व्याख्या का प्रयास हम यहाँ नहीं करेंगे। लेकिन इधर इन शब्दों की चर्चा कुछ ज्यादा ही है। और, जब-जब ऐसा हुआ है तब-तब इन सौ वर्षों में सत्ता ने, सरकारों ने हथियारों तथा सैनिकों की वृद्धि में अत्यन्त तीव्रता लाई है। नतीजे रहे हैं :

- 1914-1919 की महा मारकाट जिसे पहले महायुद्ध कहते थे और अब प्रथम विश्व युद्ध कहते हैं। ढाई करोड़ लोग तो युद्ध में ही मारे गये।
- 1939-1945 वाली और भी बड़ी मारकाट जिसे द्वितीय विश्व युद्ध कहते हैं। इसमें पाँच करोड़ लोग युद्ध में मारे गये।

ऊँच-नीच, लूट-खसूट, अमीर-गरीब की स्थितियों में युद्ध तो लगातार चलते ही रहे हैं। इधर 1890 से संकट की जो बातें आई उन्होंने युद्धों की सँख्या व तीव्रता को बढाया और शिखर था 1914-19 का महायुद्ध। और, 1929 की महामन्दी ले गई 1939-45 के दूसरे विश्वयुद्ध में। उन दौरानों में जो अनुभव हुये उन्हें जानने, समझने तथा उन पर मनन कर आज क्या-क्या करें और क्या-क्या नहीं करें यह तय करना आवश्यक है। इधर फिर संकट और मन्दी की हावी चर्चा ने इसे हमारे लिये अर्जेन्ट बना दिया है।

– मण्डी-मुद्रा के दबदबे में बेरोजगारी तो रहती ही है, संकट-मन्दी के दौर में बेरोजगारी बहुत बढ जाती है।

– मजदूरों-मेहनतकशों के लिये तो संकट-मन्दी सीधे-सीधे जीवन-मरण का प्रश्न खड़ा कर देते हैं। असंतोष बहुत बढ जाता है। मजदूरों को, किसानों को बाँधे रखने के प्रचलित तौर-तरीके नाकाफी साबित होते हैं।

– सत्ता के इर्द-गिर्द के लोगों की अनिश्चितता-अस्थिरता के संग-संग असुरक्षा व उसकी भावना बढ जाती हैं। सत्ता के शिखर पर बैठे लोगों पर "कुछ करो" के लिये दबाव तेजी से बढता है।

– जेलें बढाई जाती हैं, पुलिस बल में भारी वृद्धि की जाती है और सेना सर्वोपरि स्थान लेने लगती है।

– सरकारें तथा कम्पनियाँ आज मण्डी-मुद्रा की प्रतिनिधि हैं। इसलिये संकट-मन्दी की मार से मण्डी-मुद्रा को बचाने के लिये सरकारें तथा कम्पनियाँ अनेकानेक हथकण्डे अपनाती हैं। मजदूरों, किसानों, दस्तकारों को शिकार बनाने के लिये पापड़ बेले जाते हैं। मजदूरों-किसानों के विरोध-विद्रोह को दबाने के लिये निर्मम दमन के संग-संग लोक लुभावने नारे उछाले जाते हैं। मेहनतकशों में से ही कुछ को "अन्य" बताया जाता है, "शत्रु" कहा जाता है।

– सरकारें तथा कम्पनियाँ संकट-मन्दी की मार को अन्य सरकारों व कम्पनियों पर धकेलने के लिये गिरोह बनाती हैं। और, मजदूरों-मेहनतकशों को दबाने-पुचकारने में सफलता आगे ही दो महायुद्धों को जन्म दे चुकी है।

आज अन्तरिक्ष तक युद्ध-क्षेत्र और युद्ध के लिये क्षेत्र बन गया है। एटम बमों और प्रक्षेपास्त्रों के भण्डार तो हैं ही। ऐसे में हमारे लिये सर्वोपरि महत्व की बात तो यह है कि सरकारों के गिरोहों के बीच तीसरा विश्व युद्ध नहीं हो। इसके लिये जरूरी है कि मजदूरों-मेहनतकशों के असन्तोष, विरोध, विद्रोह हर जगह बढें।

✶ सरकारों और कम्पनियों पर भरोसा बर्बादी की राह है। कुर्बानी की घातकता दर्शाने के लिये उदाहरणों की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। आज उँगली माँगने वाले कल पहुँचा माँगेंगे, परसों पूरा हाथ और फिर धड़। शहीद को दूर से सलाम! हर कदम पर और जहाँ तक हो सके-जिस प्रकार का हो सके विरोध करना बनता है। ताकत के बल पर इस-उस जगह कम्पनियाँ अपनी शर्तें थोप देती हैं तो भी हमारी सहानुभूति अधिक चोट खाये मेहनतकशों के प्रति होनी बनती है। छँटनी जैसी चीजों के लिये मौन सहमति-स्वीकृति खतरनाक है। पीट दिये अथवा पिट गये पर हँसना, मजाक उड़ाना अपनी बारी नजदीक लाना है। सरकार और बैंकों पर भरोसा करके अमरीका में जो डूब गये, सड़क पर आ गये उन से यह सीख लेना बनता है कि जहाँ तक हो सके बैंकों से अपने पैसे निकाल लें, बैंकों में पैसे जमा नहीं करायें। पेट काट कर दो पैसे बचाना और उन्हें कम्पनियों के शेयरों में लगा कर डुबाना..... दरअसल समस्या पैसों पर भरोसे में है। अनेकानेक समस्याओं से पार लगाने के लिये पैसों पर भरोसा किया जाता है। इस सन्दर्भ में यह याद रखने की आवश्यकता है कि साठे-क वर्ष पहले जर्मनी में, जापान में थैला भर कर पैसे ले जाना और मुट्ठी में सब्जी लाना सामान्य हो गया था। इधर विश्व के कई क्षेत्रों में स्थानीय मुद्रा थैले-मुट्ठी वाली स्थिति में आ गई है। आज की अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा, डॉलर के साथ कब यह हो जाये किसी को पता नहीं – विशेषज्ञ मौन हैं। वास्तव में रुपयों-पैसों पर भरोसा करना सरकारों पर भरोसा करना है। और, विश्व-भर में सरकारें डगमगा रही हैं..... इसलिये भरोसा आपस में! थोड़ा ठहर कर देखिये कि इतनी सार जलन-चुगली के बावजूद हम अभी भी एक-दूसरे पर कितना भरोसा करते हैं, कितनी प्रकार के भरोसे करते हैं। हाँ, भरोसे तो चाहियें ही चाहियें – आपस में भरोसा बढाना बनता है।

✶ बढती बेरोजगारी बढती सँख्या में सेक्युरिटी गार्ड, पुलिसकर्मी, सैनिक की नौकरी लाती है। इनकी भर्ती मेहनतकशों की कतारों से होती है। मेहनतकशों में से किसी को "अन्य-दूसरे-शत्रु" बना कर अपने गुस्से का टारगेट बनाना गर्त की राह है। गार्ड का रुख और गार्ड के प्रति रुख महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। बढिया गार्ड बनने के फेर में नहीं पड़ना.... सिपाही को शत्रु नहीं लेना। दोनों तरफ से खानापूर्ति, महज खानापूर्ति और आपस में टकराव से बचना बनता है। सशस्त्र संघर्ष और विद्रोह की स्थिति में भी आपस में मरने-मारने से बचना बनता है। वर्दी वाले मेहनतकश बच कर निकलना खूब जानते हैं, इसे बढाने की आवश्यकता है। प्रेरणा 1914-19 और 1939-45 के सैनिकों से लेनी चाहिये। बरसों खन्दकों-मोर्चों पर रहे 95 प्रतिशत सैनिकों ने गोली ही नहीं चलाई या फिर गोली हवा में चलाई और बमों को निर्जन स्थानों पर डाला। हक्की-बक्की सरकारों और जनरलों ने वीरों के, शहीदों के किस्से गढे तथा चन्द सिरफिरों को महिमामंडित किया। और फिर, युद्ध के दौरान 1917 में रूस में सिपाहियों ने बन्दूकें जनरलों की ओर मोड़ कर नई समाज रचना के लिये हालात बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इस समय संकट-मन्दी की बात हो रही है पर यह प्रक्रिया इधर हर समय चल रही है। बात डर-भय की नहीं है, डर को बढाने की नहीं है। हम तो यूँ भी दिन में सौ बार मन को मारते हैं, रोज ही कई-कई बार मरते हैं। पर फिर भी जीवन की लालसा है! इसलिये जीवन को सिकोड़ती-संकीर्ण बनाती-दुखदायी बनाती ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी, मण्डी-मुद्रा को दफा करना है.....

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

ए पी इंजिनियरिंग वर्क्स मजदूर : " प्लॉट 79-80-81 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में ***कपारो*** और ***मारुति सुजुकी*** की शीट मैटल कम्पोनेन्ट्स का काम होता है। सी एन सी मशीनों पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी जगह 12 घण्टे की एक शिफ्ट। फैक्ट्री में 250 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 25 की ही हैं। पावर प्रेस 70 हैं और सब मैकेनिकल हैं – महीने में एक-दो एक्सीडेन्ट हो जाते हैं। ज्यादा हाथ कटने पर पीछे की तारीख से ई.एस.आई. करवा देते हैं। उँगली का पोर कटने पर कोई ई.एस.आई. नहीं, मजदूर प्रायवेट में स्वयं उपचार करवाये और दवा के पैसे कम्पनी से लेते समय चार गाली सुने। हैल्परों की तनखा 2200 रुपये, प्रेस ऑपरेटरों की 2400 और सी एन सी ऑपरेटरों की 3000-3200 रुपये। जिन 25 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं उन्हें देते 2700-2850 रुपये हैं पर हस्ताक्षर 3510 और 3640 पर करवाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे 2700-2850 में से काटते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। डायरेक्टर सुभाष पाहवा बहुत गाली देता है, थप्पड़ मार देता है।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज श्रमिक : " प्लॉट 21-22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 1000 तो स्टाफ के लोग ही होंगे और फिर 4500 मजदूर हैं जिनमें 1500 महिला हैं। अधिकतर महिला मजदूरों की तनखा 2400 रुपये। फैक्ट्री में उत्पादन का मुख्य बायर ***गैप*** कम्पनी है और अन्य बायरों में ***ज़ारा, कोलम्बिया, वॉल मार्ट*** आदि हैं।

"एस पी एल की प्लॉट 47-48 वाली फैक्ट्री में स्टाफ को सितम्बर की तनखा आज, 22 अक्टूबर तक नहीं दी है... ठेकेदारों के जरिये रखे 500 मजदूरों को सितम्बर की तनखा 27 अक्टूबर को दी।"

जाह्नवी डाइंग कामगार : " मथुरा रोड़ पर हेमला फैक्ट्री के पीछे स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर हैल्परों को महीने के 3000 और ऑपरेटरों को 3600 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. मेन्टेनैन्स विभाग के 5-6 मजदूरों के ही हैं। अगस्त और सितम्बर की तनखायें आज 22 अक्टूबर तक नहीं दी हैं।"

महावीर इन्टरप्राइज. कैपिटल रबड़ वरकर: " 22 ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के महिला मजदूरों को 2200 रुपये और पुरुष मजदूरों को 2200-3000 रुपये।"

गुड्ईयर टायर मजदूर : " मथुरा रोड़, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को जनवरी से प्रतिमाह देय डी.ए. के 76 रुपये सितम्बर की तनखा तक भी नहीं दिये हैं।"

बालुजा इन्टरनेशनल श्रमिक : " 24-25 विश्वकर्मा इन्डस्ट्रीयल कम्पलैक्स, मुजेसर स्थित फैक्ट्री में कारीगरों की तनखा 3900-4100 रुपये है पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 3000 पर ही काटते हैं। कहते हैं कि पी.एफ. दिल्ली में जमा करते हैं – बरसों से हमें फण्ड की पर्ची नहीं मिली है।"

लखानी फुटवीयर कामगार : "प्लॉट 266 सैक्टर-24 स्थित कम्पनी के II प्लान्ट में अब मोल्डिंग विभाग के 160 मजदूर ही 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। एक महीने पहले तक पूरी फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट थी – महिला मजदूरों की 10 घण्टे दिन की। ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर की बजाय डेढ की रेट से। फैक्ट्री में 550 पुरुष और 350 महिला मजदूर ***एडिडास*** और ***रीबोक*** के लिये जूते बनाते हैं। एडिडास के प्रतिनिधि महीने में एक दिन फैक्ट्री आते हैं। उस दिन फैक्ट्री चमका दी जाती है और मजदूरों को दो घण्टे के लिये मास्क, दस्ताने, चश्मे दिये जाते हैं। साहब कहते हैं, 'कोई पूछे तो कहना कि ओवर टाइम नहीं है, तीन शिफ्ट हैं।' फैक्ट्री में काम का दबाव बहुत ज्यादा है और परसनल वाले तथा सुपरवाइजर लैट्रीन-बाथरूमों में छापे मारते हैं, अन्दर घुस जाते हैं, बदतमीजी करते हैं।"

मानव रचना एजुकेशन इन्सटीट्युट वरक: "सैक्टर-43 स्थित संस्थान में कार्य करते 100 कर्मचारी ठेकेदार के जरिये रखे हैं। ई.एस.आई. कार्ड 50 को दिये हैं। तनखा हर महीने देरी से – सितम्बर की आज 13 अक्टूबर तक नहीं दी है।"

सीट्ज टैक्नोलोजी मजदूर : "प्लॉट 38 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों को सितम्बर की तनखा आज 15 अक्टूबर तक नहीं दी है।"

भास्कर रिफ्रैक्ट्रीज श्रमिक : "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जनवरी से प्रतिमाह देय डी.ए. के 76 रुपये सितम्बर माह की तनखा तक भी नहीं दिये हैं।"

श्री आर. बी. कास्टिंग कामगार : " प्लॉट 5 कृष्णा कॉलोनी, सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में कार्य करते 170 मजदूरों की तनखा 2800-3000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, 18-20 तारीख को।"

एस आर एस मॉल वरकर : "सैक्टर-12 स्थित मॉल में प्रतिदिन 10 घण्टे ड्युटी पर हैल्परों को 26 दिन के 3000 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

सेन्चुरी पैकेजिंग मजदूर : "संजय कॉलेनी, सैक्टर-23 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2300 और ऑपरेटरों की 3300 रुपये। रोज 12 घण्टे ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

वेल्डन सेलो प्लास्ट श्रमिक : "20/4 मथुरा रोड़ (प्लॉट 2 नैपको कम्पाउण्ड) स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2485 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। रोज ओवर टाइम करना पड़ता है पर मार्च से किये ओवर टाइम के पैसे आज 15 अक्टूबर तक नहीं दिये हैं – इस बीच कम्पनी सैक्टर-6 से यहाँ आ गई है। तनखा हर महीने देरी से – सितम्बर की 13 अक्टूबर को देनी आरम्भ की है और 20 तक पूरी करेंगे।"

इण्डिया फोर्ज कामगार : " प्लॉट 28 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों की तनखा 1600-2000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। रोज 4 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

डी पी ऑटो वरकर : " प्लॉट 228 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 8 घण्टे के 80 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

भाटिया क्रेन्स मजदूर : "20/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2600-3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। साहब गाली देते हैं।"

फरीदाबाद फैब्रीकेटर श्रमिक : "प्लॉट 311 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।" ***ग्लोबल कामगार :*** " प्लॉट 27 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 9 की एक शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2800 रुपये।"

मैक्रो इण्डिया वरकर : " मुजेसर स्थित वर्कशॉप में काम करते 23 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2500 रुपये। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

डिलाइट प्रेसिंग मजदूर : " प्लॉट 302 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2000-2500 तथा ऑपरेटरों की 3000-3500 रुपये। फैक्ट्री में 10 घण्टे की एक शिफ्ट है, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सितम्बर की तनखा आज 11 अक्टूबर तक नहीं दी है। ई.एस.आई. व पी.एफ. 70 मजदूरों में 20 के ही।"

प्रकाश वेबटैक श्रमिक : "20/2 मथुरा रोड़ (नोरदर्न कम्पलैक्स) स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 और ऑपरेटरों की 3200-4000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 100 मजदूरों में 10 के ही। रोज 11½ घण्टे ड्युटी, साप्ताहिक छुट्टी के दिन भी ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

जे एल ऑटो कामगार : " 14 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में तनखा 2300-2500 रुपये है पर हस्ताक्षर 3590 पर करवाते हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 15 प्रतिशत मजदूरों के ही।"

वीनस पोलीमर वरकर : " 20/4 मथुरा रोड़ (नैपको कम्पाउण्ड) स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2400 और ऑपरेटरों की 2600 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 70-80 मजदूर काम करते हैं, ई.एस.आई. एक-दो की है, पी.एफ. किसी की नहीं।"

मजदूरों को पहली जुलाई से देय डी.ए. की घोषणा हरियाणा सरकार ने नवम्बर आरम्भ तक नहीं की है।

गुड़गाँव में मजदूर

ऋचा ग्लोबल मजदूर : "प्लॉट 232 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में पीने के पानी की परेशानी है और बोतल में पानी अन्दर ले जाने नहीं देते। महिला मजदूरों को भोजन अवकाश के समय फैक्ट्री से निकलने नहीं देते। बिना कोई पत्र दिये स्थाई मजदूरों को निलम्बित करते हैं और निलम्बन भत्ता नहीं देते। छुट्टी देते ही नहीं और एक दिन छुट्टी करने पर एक दिन वापस भेज देते हैं। ड्युटी करते 7-8 महीने होने से पहले ही इधर इस्तीफे लिखवा लेते हैं। और, जिन मजदूरों को काम करते 2 वर्ष हो गये हैं उन्हें अकेले-अकेले एक कमरे में बुलाते हैं जहाँ जनरल मैनेजर, वकील व पुलिसवाला बैठे होते हैं। जबरन इस्तीफा लिखवाते हैं – मजदूर के इनकार करने पर किसी मामले में फँसा देने की धमकी देते हैं, एक महिला मजदूर के जनरल मैनेजर ने थप्पड मारा।"

हरियाणा इन्डस्ट्रीज श्रमिक : "प्लॉट 318 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 300 पावर प्रेसों पर 2500 मजदूर ***मारुति सुजुकी*** कारों के पुर्जे बनाते हैं। यहाँ से 20 गाड़ी (407 टाटा) माल रोज मारुति फैक्ट्री जाता है। मजदूरों को 8 घण्टे के 90 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। उँगली रोज कटती रहती हैं और महीनें में 2-3 बन्दों के हाथ कट जाते हैं। कम्पनी एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती, उपचार के पैसे नहीं देती, मजदूर खुद प्राइवेट में इलाज करवाये। फैक्ट्री में जो 150 स्थाई है वो सब सुपरवाइजर है और बाकी को 6-7 महीने में निकालते रहते हैं। हैल्परों से पावर प्रेस जबरन चलवाते हैं और माल खराब होने पर गाली, मारपीट, नौकरी से निकाल देना। मुख्य द्वार के अन्दर चार द्वार – तीन में पावर प्रेस और एक में पैकिंग। जाँच के लिये आने वाले अधिकारी कार्यस्थलों पर नहीं आते, दफ्तर में ही बैठ कर चले जाते हैं और.....और उस समय 500 मजदूरों को फैक्ट्री से बाहर निकाल दिया जाता है। सौ रुपये प्रतिमाह ड्युटी के हिसाब से दिवाली पर मजदूरों को बोनस देते हैं। फैक्ट्री में रात की ड्युटी के दौरान मैनेजमेन्ट लैट्रीन-बाथरूम में ताला लगा देती है। कोई छुट्टी नहीं, महीने के तीसों दिन काम।"

अनीस इं. एक्सपोर्ट कामगार : " प्लॉट 19-20 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8-9 की शिफ्ट है और कारीगर पीस रेट पर हैं। भुगतान 15 दिन पर करते हैं परन्तु कारीगरों के जो बनते हैं उन में से 300-500 रुपये काट लेते हैं और एतराज करने पर गाली देते हैं। हैल्परों की तनखा 3510 रुपये – जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं देते। ई.एस.आई. व पी. एफ. 50 मजदूरों में 10 की ही।"

इन्डीगो एक्सपोर्ट वरकर : " प्लॉट 574-75 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 1 बजे तक जबरन रोक लेते हैं और भोजन के पैसे नहीं देते। फैक्ट्री में बीमार पड़ने पर भी छुट्टी नहीं देते और साँय 6 बजे चले जाओ तो पूरे दिन की दिहाड़ी काट लेते हैं। ड्युटी के लिये 5 मिनट देरी से पहुँचने पर वापस भेज देते हैं। तनखा देरी से – कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती को सितम्बर की तनखा 18 अक्टूबर को दी और ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को आज 21 अक्टूबर तक नहीं दी है। पैसे माँगने पर गाली देते हैं। फैक्ट्री में बच्चों के कपड़े बनते हैं और माल दुबई जाता है। निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा है और उस से कम देने पर निकाल देते हैं। वैसे भी 2-4 महीने में ब्रेक कर ही देते हैं। फैक्ट्री में काम करते 250 मजदूरों में 2-4 पुराने वरकरों की ही ई. एस.आई. व पी.एफ. हैं।"

विशाल मेगामार्ट मजदूर : " कम्पनी की कई बड़ी दुकानें हैं और प्लॉट ए-244 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 2200-2500 मजदूर सिले-सिलाये वस्त्र तैयार करते हैं। जबरन ओवर टाइम करवाते हैं, भुगतान सिंगल रेट से और ऐसे में भी 500 रुपये बनते हैं तो 200 देते हैं। हैल्परों की तनखा 3510 रुपये – जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं देते। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के 500 रुपये काटते हैं और फिर 250 रुपये अलग से काटते हैं। फोटो खिंचवाते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे मुश्किल से। निकालने पर किये काम के पैसों के लिये चक्कर कटवाते हैं। सितम्बर की तनखा 18 अक्टूबर को दी।"

भोरजी सुपरटैक श्रमिक : "प्लॉट 272 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500-3000 रुपये। वेतन हर महीने देरी से – सितम्बर की तनखा कल, 20 अक्टूबर को दी।"

शगुन एपरेल्स कामगार : "प्लॉट 369 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री को रेवाड़ी ले गये। स्थाई मजदूरों को मात्र 4-5 हजार रुपये दे कर इस्तीफे लिखवाये। हम 7 ने इस्तीफे नहीं दिये और श्रम विभाग में मामला दर्ज करवाया है।"

वरकर : " प्लॉट 792 उद्योग विहार फेज-5 स्थित कम्पनी का नाम नहीं मालूम पर यहाँ गृह सज्जा के पर्दे, तकिये तैयार किये जाते हैं। सुबह 9½ से रात 1 बजे तक ड्युटी। महीने में 200 घण्टे से अधिक ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2500 रुपये। ई.एस.आई. व पी. एफ. 100 मजदूरों में 10-12 की ही।"

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 208 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3586 रुपये है जिसमें से हर महीने 500 रुपये रिश्वत लेते हैं। कम्पनी के कुछ अधिकारी ब्याज पर पैसे देते हैं -- जबरन देते हैं। एक महीने के लिये 100 रुपये का 10 रुपये ब्याज। हर महीने 6-7 लाख रुपये जबरन कर्ज देते हैं।

"प्लॉट 236 वाली फैक्ट्री में हर समय कहते हैं – 'छुट्टी नहीं करना!' मैं 11 अक्टूबर 07 को लगा था। बीमार पड़ा 20.2.08 को और 10 दिन दिल्ली में सफदरजंग अस्पताल में भर्ती रहा। डॉक्टर का कागज ले कर 1 मार्च को फैक्ट्री गया तो ड्युटी पर नहीं लिया और किये काम के पैसे माँगे तो अधिकारी ने गार्डों को बुला धक्के मार कर बाहर कर दिया। बार-बार माँगने पर भी फरवरी माह की तनखा नहीं दी तो साथी मजदूरों के कहने पर 10 अक्टूबर को मैंने इस्तीफा भी लिख कर दे दिया पर फिर भी फरवरी माह में किये काम के पैसे मुझे आज 21 अक्टूबर तक नहीं दिये हैं। मेरी तनखा से पी.एफ. के पैसे काटते थे पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते – गौरव इन्टरनेशनल अधिकारी कहते हैं कि सरकार का नियम है इसलिये फण्ड मिलेगा ही नहीं।"

इनस्टाल एक्सपोर्ट श्रमिक : " प्लॉट 378 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में प्रतिदिन सुबह 9 से रात 1 की ड्युटी है और सुबह 4 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम – 'बायर पूछे तो कहना कि ओवर टाइम नहीं होता।' ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। लाइन मास्टर गाली देते हैं।"

मोडलामा कामगार : " प्लॉट 201 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में काम करते 500 मजदूरों में से 425 को दिवाली से पहले नौकरी से निकाल दिया है।

"मोडलामा कम्पनी की प्लॉट 200 वाली फैक्ट्री में सितम्बर माह में 110 घण्टे ओवर टाइम काम हुआ था। ऊपर से आदेश है कह कर इन में से 8 घण्टे काट लिये। जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं देते। फैक्ट्री में काम करते 450 मजदूरों में से 70 को कल, 20 अक्टूबर को निकाल दिया। बोनस नहीं देते, गाली देते हैं।"

सरगम वरकर : " प्लॉट 152-53 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में गाली बहुत देते हैं, महिला मजदूरों को भी। पहले बताते नहीं और फैक्ट्री पहुँचने पर 'काम नहीं है' कह कर वापस कर देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर छोड़ने-निकालने के बाद फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते। ई.एस. आई. कार्ड के लिये फोटो के 50 रुपये काटते हैं जबकि बाहर 25 रुपये में है और ई.एस.आई. कार्ड देते ही नहीं। तनखा में हर महीने 200-300 रुपये की गड़बड़ी करते हैं।"

आर एल खन्ना मजदूर : "प्लॉट 289 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 150 हैल्परों की तनखा 2400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, बोनस नहीं।"

ईस्टर्न मेडिकिट श्रमिक : " उद्योग विहार में 6 प्लॉटों में स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को सितम्बर की तनखा 18 अक्टूबर को दी।"

ओरचिड कामगार : "प्लॉट 217 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री यहाँ ओखला (दिल्ली) से आई है। कम्पनी तीन वर्ष से बोनस नहीं दे रही।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद – 121001

आज चीन में

कोई परिचित नहीं हो पर जेब में कुछ पैसे हों तो नये देश या शहर में टैक्सी चालक अच्छे गाइड साबित होते हैं। लेकिन चीन में टैक्सी चलाने वाले अधिकतर लोग अँग्रेजी नहीं समझते और मुझे अन्य भाषा के तौर पर अँग्रेजी ही आती है। इसलिये चीन में चीजें जानने के लिये मुझे दूसरे जरियों का प्रयोग करना पड़ा। तीन महीने मैं शंघाई में रहा और मैंने काफी कुछ नया सीखा व जाना। छोटी-छोटी बातें कितना कुछ बता देती हैं। हर कदम पर मुझे वहाँ के लोगों ने मदद की।

चीन के बारे में भारत में कई धारणायें बनी हुई हैं। कुछ सच हैं, कई गलत। मुझे डराया गया था कि वह लोग साँप, चूहे, मेंढक खाते हैं। बिलकुल सही है। साँप और चूहे तो मैंने नहीं खाये, लेकिन मेंढक का स्वाद उत्कृष्ट था। हफ्ते में दो बार मैं मेंढक खाने लगा था।

खैर। मेंढक के अलावा चीन कई पैमानों पर बिलकुल भारत जैसा ही है। शंघाई से 200 किलो मीटर दूर एक प्रदेश है, गुइज़्हौ। जिस दिन मैं चीन पहुँचा, गुइज़्हौ में दंगे हो रहे थे। बात यह थी: वहाँ के किसी नेता के रिश्तेदार ने एक लड़की के साथ दुर्व्यवहार कर उसकी हत्या कर दी थी और स्थानीय प्रशासन दोषी को बचाने में मदद कर रहा था। दो महीनों तक गुइज़्हौ के लोग सरकारी दमनचक्र का सामना करते रहे थे। मुझे लगा मैं भारत की खबर पढ रहा हूँ। शंघाई पहुँचने के एक हफ्ते बाद एक और घटना हुई। एक कैदी ने वहाँ पुलिस थाने में 6 पुलिसकर्मियों की हत्या कर दी। बाद में कैदी ने बताया कि पुलिस ने उसे झूठे मुकदमे में मात्र इसलिये फँसा रखा है क्योंकि उसने उन्हें घूस देने से इनकार कर दिया था। पुलिस ने उसके आरोपों को बेबुनियाद बताया। खैर, अगले दिन शंघाई में उस व्यक्ति के समर्थन में हजारों लोग सड़कों पर उतर आए थे।

चीन में एक पार्टी की सरकार है, कम्युनिस्ट पार्टी की। पार्टी बहुत ताकतवर है और अकेला इन्सान पार्टी या सरकार की निंदा नहीं कर सकता-सकती। लेकिन उतना ही भय पार्टी को लोगों से भी है। शंघाई, हांगकांग, बीजिंग में आए दिन प्रदर्शन होते रहते हैं। लोग कभी प्रदूषित हवा के खिलाफ आवाज उठाते हैं तो कभी सड़कों पर खिलौनों की बिक्री पर पाबन्दी के खिलाफ। मजबूरन सरकार को लोगों की कुछ बातों को मानना ही पड़ता है।

अगले अंक में चीन के ताजा घटनाक्रम, वहाँ की औद्योगिक और खासतौर पर मजदूरों की स्थित पर मैं अपने अनुभव बताऊँगा। — अ (जारी)

सरकारी निर्माण

भटिण्डा छावनी निर्माण मजदूर : "बहुत बड़ी भटिण्डा छावनी में तीन स्थानों पर कई हजार दुमंजिला और तिमंजिला मकान फौजियों के परिवारों के लिये डेढ वर्ष से बन रहे हैं। निर्माण कार्य में यूँ तो कई जगहों के मजदूर हैं पर अधिक सँख्या छत्तीसगढ, उड़िसा और बिहार से मजदूरों की है। बड़े ठेकेदारों ने बिलासपुर, रायगढ, बोलंगीर, कटिहार से 15-30 के समूहों में इक्ट्ठी टिकट कटवा कर मजदूर लाने के लिये लोग रखे हैं। ईंट-गारा, मिट्टी, पत्थर, लोहा ढोने वाली महिला मजदूरों को कुली कहते हैं और इन्हें 8 घण्टे के 65-70 रुपये देते हैं। साल-भर पहले 4-5 हजार महिला मजदूर थी, अब काम पूरा होने वाला है और इस समय 1-1½ हजार हैं। यही कार्य पर थोड़ा ज्यादा वजनदार काम करते पुरुष मजदूरों को बेलदार कहते हैं और इन्हें 8 घण्टे के 70-80 रुपये देते हैं। बच्चे भी निर्माण कार्य में हैं: 10-16 वर्ष की लड़की को कुली कहते हैं और 8 घण्टे काम के 45 रुपये देते हैं, 10-16 वर्ष के लड़के को बेलदार कहते हैं और 8 घण्टे के 50 रुपये देते हैं। चिनाई मिस्त्री को 8 घण्टे के 110-120 रुपये और यह भी 2-3 हजार थे, अब 900-1000 हैं। जमादार लोग प्रतिमाह कुली से 100 में 2 रुपये, बेलदार से 5, और मिस्त्री से 10 रुपये कमीशन लेते हैं। अन्य कारीगर कार्य-अनुसार आते-जाते रहते हैं और कई लोग बड़े ठेकेदारों से अलग-अलग काम के ठेके लेते हैं। छत डालने (शटरिंग), लिपाई, प्लम्बर, बिजली, रंग-रोगन, टाइल, फर्श के ठेके लेने वाले 100-120 रुपये दिहाड़ी पर मजदूर रखते हैं। ठेके वाले कार्यों में रोज 12-14 घण्टे काम। निर्माण मजदूरों के निवास के लिये 5 x 7 फुट के कमरे, ऊँचाई 6 फुट और ऊपर टीन की चद्दर। चिकित्सा का कोई प्रबन्ध नहीं, एम्बुलैन्स नाम की चीज नहीं। निवास स्थल पर नंगे तार — बिजली ने मजदूरों के दो बच्चों की जान ले ली। बगल की नहर में मजदूरों के दो बच्चे डूब कर मरे। इधर छावनी में निर्माण कार्य पूरा होने को है और ***गुरु गोविन्द सिंह भटिण्डा रिफाइनरी*** में जोर पकड़ रहा है — मजदूरों के लिये हालात वहाँ भी ऐसे ही हैं।"

दिल्ली से — ***पायनीयर प्लास्टिक मजदूर :*** "ए-135 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। वरकर को 12 घण्टे के 120 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ.60-70 मजदूरों में किसी की नहीं, स्टाफ के 10 लोगों की ही हैं।"

बसन्त (इंडिया) श्रमिक : "जी-4 बी-1 एक्सटैन्शन मोहन कॉपरेटिव इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, बदरपुर स्थित फैक्ट्री में सितम्बर की तनखा आज 20 अक्टूबर तक नहीं दी है। मैनेजर गाली देते हैं। तनखा माँगने पर डायरेक्टर मारपीट पर उतारू हो जाते हैं।"

दिल्ली में अकुशल श्रमिक (हैल्पर) न्यूनतम वेतन 3683 रुपये (8 घण्टे के 142 रुपये)।

धन्धा दवा का

यहाँ हम अँग्रेजी, यानी ऐलोपैथिक दवाईयों की ही चर्चा करेंगे। इस समय करीब 13 हजार दवाईयाँ हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इन में से 257 को ही आवश्यक घोषित किया है।

ऐलोपैथी का मूल सूत्र है: दवाई एक जहर है। कम से कम और बहुत-ही सावधानी से दवा लेनी-देनी चाहिये।

और आज सूत्र है: "बीमारी एक तो दवाई कम से कम छह दो।" एक दवा बीमारी पर नियन्त्रण के लिये। दूसरी दवा बीमारी के लक्षणों को सीमित करने के लिये। और, इन दवाईयों के दुष्प्रभावों को कम करने की दवा..... ऐलोपैथी के अपने मापदण्ड के अनुसार जो दवा दी जा रही हैं उन में 60 प्रतिशत अनावश्यक हैं, 40 प्रतिशत ही आश्यक हैं।

अधिक दवा देने का मुख्य कारण दवा का धन्धा है। दवा कम्पनियाँ स्कीमों के जरिये लालच और खुली रिश्वत का बड़े पैमाने पर प्रयोग करती हैं। गया वह जमाना जब डॉक्टरों को स्वयं जाँचने के लिये दवा के सैम्पल दिये जाते थे।

दवा के उत्पादन की लागत से तीन-चार गुणा राशि दवा के प्रचार-प्रसार के लिये खर्च की जाती है। दवा पर जो मूल्य अंकित होता है उसके एक तिहाई या इस से भी कम कीमत पर दवा कम्पनियाँ इन्हें थोक में खरीदने वालों को देती हैं।

एक और गोरखधन्धा जेनेरिक दवा तथा पेटेन्ट दवा का है। जेनेरिक और पेटेन्ट दोनों एक ही दवा होती हैं लेकिन उनके मूल्य में बहुत ज्यादा फर्क होता है। किसी दवा की जेनेरिक गोली एक रुपये में मिलती है तो उसी दवा की पेटेन्ट गोली दस से पचास रुपये में मिलेगी। जिक्र कर दें, जेनेरिक दवा बनाने वाली कम्पनियाँ भी भारी मुनाफा कमाती हैं।

और फिर, नकली दवा अपने आप में एक बहुत बड़ा धन्धा है। भारत में करीब तीस प्रतिशत दवाओं के नकली होने का अनुमान है।

यहाँ की एक और बात करें। दवा के परीक्षण के लिये मनुष्यों पर किये जाते प्रयोग भी भयावह हैं। कम्पनियों को परीक्षण करने वाले सस्ते मिलते हैं, डॉक्टरों का भाव यहाँ यूरोप-अमरीका की तुलना में बहुत कम है। और, जिन पर परीक्षण किये जाते हैं उनकी असहायता तो और भी ज्यादा है। जिन पर परीक्षण किये जाते हैं उन्हें बताया तक नहीं जाता कि उन पर दवा का परीक्षण किया जा रहा है। इस सब का एक बहुत-ही दुखद परिणाम हाल ही में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में 400 बच्चों की मृत्यु रहा है।

एक कथन है: ऐलोपैथी के शब्दकोष मैटिरिया मैडिका में वर्णित सभी दवाईयों को अगर महासागर में डाल दिया जाये तो मानव जाति का बहुत कल्याण होगा और मछलियों को बहुत नुकसान होगा।

अन्त में: वायरल बीमारियों को नियंत्रित करने वाली कोई दवाई नहीं है। शरीर अपनी प्रतिरोधक क्षमता का उपयोग कर वायरल बीमारियों का उपचार स्वयं करता है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011